8

क्या स्त्रियों को पुरुषों को सिखाने की अनुमति है?

कुछ समय पहले अकेली बैठी एक स्त्री ने एक जवान प्रचारक को बताया कि स्त्री के लिए पुरुष को वचन बताना गलत है। बातचीत खत्म हो गई, जवान ने उस महिला से पूछा, ''क्या तुम यह मुझे सिखाने की कोशिश कर रही हो कि स्त्री का पुरुष को सिखाना गलत है?''

हर जगह पुरुष

1 तीमुथियुस 2:8 में पुरुषों को निर्देश के भाग का पौलुस ने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''इसलिए मैं चाहता हूं कि हर जगह पुरुष, बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।'' ''हर जगह'' से पौलुस का क्या अर्थ था?

Topos शब्द, जिसका अनुवाद ''जगह'' हुआ है *panti* (''हर'') शब्द के साथ होनर आरम्भिक मसीहियों द्वारा आराधना के लिए अपनी जगहों के लिए इस्तेमाल किया जाता था (1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 2:14; 1 थिस्सलुनीकियों 1:8; 1 तीमुथियुस 2:8)। संदर्भों में जहां वचन में यह शब्द आता है, ''हर जगह'' शब्द का अर्थ पृथ्वी की हर जगह नहीं हो सकता। एक खोजपूर्ण लेख में एवरेट फर्ग्यूसन ने दिखाया कि आरम्भिक मसीही लोगों द्वारा साहित्य में *panti topos* का इस्तेमाल आराधना के लिए मसीही लोगों के हर जगह इकट्ठे होने के अर्थ में किया जाता था। इससे इस निष्कर्ष में और वजन जुड़ जाता है कि 1 तीमुथियुस 2:8-12 केवल मसीही लोगों की साधारण सभा के लिए ही लागू होता है।

फर्ग्यूसन डेंकर-बाउर के *टोपोस* को आम जगहों में लागू करने से सहमत नहीं था। उसने लिखा, ''यह अपर्याप्त है, क्योंकि इस प्रभाव के लिए कि यहूदियों में कई संदर्भों में 'जगह' का 'आराधना की जगह' के हवाले से महत्व होने के कारण यह एक मजबूत कथन हो सकता है।''[1]

संक्षेप में, फर्ग्यूसन ने बाद में लिखा:

> इस पेपर में सर्वेक्षण किए गए यहूदी और आरम्भिक मसीही इस्तेमाल से यह बात और मजबूत हो जाती है कि 1 तीमुथियुस 2:8 में *en panti topos* ''मसीही सभाओं में'' प्रार्थना में पुरुषों (*andras*) के अगुआई करने के हवाले के रूप

में समझा जाना चाहिए। इस आयत का परिणाम 1 कुरिन्थियों 14:33–35 के अर्थ के बहुत निकट सामानांतर बनता है।[2]

एक अन्य लेख में फर्ग्यूसन और उसकी पत्नी ने लिखा, ''इसके अलावा अपने कई अर्थों के बीच यूनानी *टोपोस* का मन्दिर या आराधनालय के लिए यहूदियों में एक तकनीकी इस्तेमाल था और यही इस्तेमाल कलीसिया की सभा के स्थान के सम्बन्ध में मसीही लोगों में जारी रहा।''[3]

Andras जिसका अनुवाद इस आयत (1 तीमुथियुस 2:8) में ''पुरुष'' हुआ है, वह विशेष शब्द है, जिसका अर्थ ''स्त्रियों'' (1 तीमुथियुस 2:9) या ''स्त्री'' (1 तीमुथियुस 2:11) के विपरीत ''पुरुषों'' है, यद्यपि इसका अनुवाद ''पुरुषों'' या ''पतियों'' हो सकता है। मसीही सभाओं में प्रार्थनाओं में अगुआई करने की ज़िम्मेदारी स्त्रियों को नहीं, बल्कि पुरुषों को, दी जाती थी और वह भी केवल उन्हीं पुरुषों को, जो पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे हों। इस पाबन्दी का संकेत ''पवित्र हाथों को उठाकर'' (1 तीमुथियुस 2:8) वाक्यांश से मिलता है।

वैसे ही स्त्रियां

केवल पुरुषों को ही उनके निर्देश नहीं दिए गए थे, स्त्रियों को भी ''वैसे ही'' निर्देश दिए गए थे। पौलुस साधारण सभा के बारे में पुरुषों को सूचित कर रहा था और ''वैसे ही'' (यू.: *hosautos*) स्त्रियों को निर्देश दे रहा था (1 तीमुथियुस 2:9)।

Gunaikos का अनुवाद ''स्त्रियां'' या ''पत्नियां'' हो सकता है। यह तथ्य कि ''स्त्रियों'' से पहले कोई सम्बन्धवाचक सर्वनाम नहीं आता (1 तीमुथियुस 2:9, 10, 11, 12) सम्भवतया यह संकेत देता है कि पौलुस मण्डली में स्त्रियों की बात कर रहा था न कि पत्नियों की या किसी विशेष समूह की स्त्रियों की। उसने उन्हें सादा वस्त्र पहने और बिना कीमती शृंगार के रहने के लिए और अपने भले कामों से यह दिखाने के लिए कहा कि वे *theosebeia* को मानती हैं।[4] पुरुषों के हाथ इस अर्थ में ''पवित्र'' होने आवश्यक थे कि उन्हें उनका इस्तेमाल पवित्र उद्देश्यों के लिए करना था; वैसे ही स्त्रियों को अपने वस्त्र और कामों से यह दिखाना था कि वे परमेश्वर के लिए सम्मान से प्रेरित थीं।

सीखना और सिखाना

पौलुस ने लिखा ''स्त्री चुपचाप पूरी आधीनता से उपदेश ग्रहण करे। परन्तु मैं स्त्री को उपदेश करने या पुरुष पर आज्ञा चलाने की अनुमति नहीं देता, बल्कि चुपचाप रहे'' (1 तीमुथियुस 2:11, 12;NASB)। शायद NASB में इन आयतों का अनुवाद सब अनुवादों से अधिक ईमानदारी से किया गया है। इस आयत में *hesuchia* शब्द, जिसका अनुवाद अधिकतर संस्करणों में ''चुपचाप'' हुआ है, 1 कुरिन्थियों 14:34 वाले ''चुप'' शब्द (यू. *signatosan*) वाला शब्द नहीं है, जहां इसका अर्थ ''कोई आवाज़ न करना'' है। *Hesuchia* (प्रेरितों 22:2; 2 थिस्सलुनीकियों 3:12) में ''शान्त'' और ''मौन'' का विचार मिलता है, जैसा कि इससे

मिलते-जुलते शब्द *hesuchios* में भी देखा जाता है (1 तीमुथियुस 2:2; 1 पतरस 3:4)। यह ''प्रचण्ड'' और ''कोलाहलपूर्ण''का विरोधी शब्द है (प्रेरितों 22:2; 2 थिस्सलुनीकियों 3:12), जैसा कि क्रिया रूप *hesuchazo* से स्पष्ट है (''चुपचाप,'' लूका 14:4; ''विश्राम किया,'' लूका 23:56; ''चुपचाप रहे,'' प्ररितों 11:18; ''चुप हो गए,'' प्रेरितों 21:14; ''चुपचाप,'' 1 थिस्सलुनीकियों 4:11)। स्त्रियों का सिखाने की स्थिति में बर्ताव करना अधीनता में, खामोशी से और आदरपूर्वक होना चाहिए न कि आक्रमक होकर या धौंस दिखाकर।*Hesuchia* दीन मन का विवरण है, जो मसीही लोगों की आम सभा में प्रभुता करने या सभा के निर्देशक के रूप में काम करने की कोशिश करने वाला न हो। ऐसे मन वाले लोग आज्ञा देने और हठधर्मी होने के बजाय अधीन और दीन होकर पुरुष नेतृत्व के प्रति सम्मान दिखाते हैं।

इसके अलावा स्त्रियों को पुरुष को ''सिखाने'' की अनुमति नहीं थी। सिखाने के लिए इस रोक में अकेले में सिखाना शामिल नहीं था, परन्तु इसका अर्थ सार्वजनिक सभाओं में पुरुषों को सिखाने के अर्थ में लिया जाना चाहिए। पौलुस ने लिखा कि तीमुथियुस विश्वासी ''मनुष्यों'' (*anthropois,* जिसका अर्थ ''लोगों'' है, न कि *andras* जिसका अर्थ ''नर'' है) को सिखाए, जो दूसरों को सिखाने के योग्य हों (2 तीमुथियुस 2:2)। इस शब्द का अनुवाद ''मनुष्यों'' हुआ है, जिसका सामान्य अर्थ स्त्रियों सहित ''मनुष्यजाति'' है; इस प्रकार स्त्रियों को दूसरों को सिखाने के लिए सिखाया जाना था। बूढ़ी स्त्रियों को जवान स्त्रियों को सिखाना था (तीतुस 2:3-5)। प्रिसकिल्ला और उसके पति ने अपुल्लोस को एक ओर ले जाकर सिखाया था (प्रेरितों 18:26)। तीमुथियुस की माता और नानी ने उसे पवित्र शास्त्र की बातें सिखाई थीं (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)। स्त्रियों को मण्डली की सभाओं के बाहर पुरुषों समेत दूसरों को सिखाने की अनुमति थी। यह शिक्षा अधिकार की स्थिति लिए बिना और खामोशी और अधीनता से सही स्थिति में होनी चाहिए थी।

आज्ञा न चलाएं

स्त्रियां पुरुष पर *authentein* अर्थात ''आज्ञा न चलाएं'' (1 तीमुथियुस 2:12)।*KJV* का अनुवाद ''usurp authortiy'' भ्रमित करने वाला है।*KJV* के आधार पर कुछ लोगों का कहना है कि स्त्रियां पुरुष पर अधिकार कर सकती हैं, यदि उसे वह अधिकार पुरुष की ओर से दिया गया हो। उनका कहना है कि ऐसे मामलों में वह पुरुष पर अधिकार नहीं कर रही होगी, क्योंकि उसे वह अधिकार दिया गया है; परन्तु ''usurp'' यूनानी भाषा में नहीं है।*authentein* का अर्थ ''अधिकार रखना'' या ''अधिकार चलाना'' है। मण्डली की स्त्रियां पुरुषों पर अधिकार न चलाएं, बल्कि अधीन रहें। पुरुषों को स्त्रियों को अधिकार की स्थिति देने की वह स्थिति देने का अधिकार नहीं है, जो उन्हें परमेश्वर की ओर से दी गई है।

पौलुस ने संस्कृति पर इस मामले में अपने निर्देश को आधार नहीं बनाया।बल्कि सृष्टि की तरतीब और अदन की वाटिका में किए गए पाप को बनाया: ''क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई'' (1 तीमुथियुस 2:13-15)। पौलुस ने यह नहीं कहा कि हव्वा अपराधिनी हुई, बल्कि

उसने कहा कि ''स्त्री'' ने अपराध किया। वह इस कथन को इस प्रकार बना सकता था, जिससे दोष अधिक न लगे पर उसके अपराध के दण्ड का कारण बताया जा सके (''और वह तुझ पर प्रभुता करेगा''; उत्पत्ति 3:16) आज भी स्त्रियों पर लागू होता है। इसके अलावा यह टिप्पणी उसकी अन्तिम टिप्पणी के लिए मंच तैयार करती है कि स्त्री *teknogonias* (मूलतः, ''बच्चे जनने'') ''के द्वारा रक्षा की जाएगी।''

बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी

NASB में *sothesetai* का अनुवाद ''उद्धार पाएगी'' के बजाय ''preserved'' अर्थात रखी जाएगी करके शायद सही किया है (1 तीमुथियुस 2:15)। यह अर्थ मानने योग्य है और पूरे संदर्भ से अधिक मेल खाता हो सकता है। बच्चे जनने के द्वारा, मानव जाति के भाग के रूप में स्त्रियां अपने अस्तित्व को बनाए रखेंगी। इसके अलावा वे अपने अनन्त अस्तित्व को भी आश्वस्त करेंगी ''यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें''(1 तीमुथियुस 2:15ख)। इस प्रकार वे अपने लिए अनन्त जीवन को पा लेंगी जो अपराध करने के कारण खोया था।

एक और सम्भव लगने वाली व्याख्या है कि स्त्री के द्वारा पैदा होने वाले बच्चे ने स्त्रियों के लिए उद्धार उपलब्ध करा दिया है। बालक यीशु पुरुषों के द्वारा नहीं आया। उद्धार स्त्री के द्वारा लाया गया है, क्योंकि पुरुष ने नहीं, बल्कि एक स्त्री ने उस बच्चे को जन्म दिया, जिसने उद्धार सम्भव बनाया। पौलुस ने ''बच्चे जनने'' का बहुवचन नहीं बल्कि एक वचन ''बच्चा जनने'' का इस्तेमाल किया। इसलिए यह आयत इस प्रकार पढ़ी जा सकती है, ''...पर वह उद्धार पाएगी''; यानी एक वर्ग के रूप में पुरुष नहीं, बल्कि स्त्री ''बच्चा'' जनने के द्वारा उद्धार पाएगी। परन्तु ''वे'' (यूनानी में बहुवचन) अर्थात सामान्य स्त्रियों को उद्धार विश्वासी मसीही जीवन में बने रहने के आधार पर, शर्त सहित मिलता है।

सारांश

कलीसिया में स्त्रियों को पुरुषों पर आज्ञा चलाने की अनुमति नहीं है। सीखने की स्थिति में उन्हें हठधर्मी नहीं, बल्कि आदर करने वाली होना चाहिए। साधारण सभा के बाहर वे पुरुषों को सिखा सकती हैं, टिप्पणियां कर सकती हैं, और प्रश्न पूछ सकती हैं; परन्तु पुरुषों के होने पर सिखाने की स्थिति में वे नियन्त्रण नहीं कर सकतीं।

आम सभाओं में अपने ऊपर लगी पाबन्दियों के कारण स्त्री को परमेश्वर के लिए अपनी सेवा से पीछे नहीं हट जाना चाहिए। अपने प्रतिदिन के मेल-जोल में वह कई लोगों को सिखा सकती है। सिखाने की उसकी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक प्रभु के मार्ग में बच्चों को सिखाना है। इतिहास में कई बड़े लोग उन बुलन्दियों को अपनी माताओं से मिली शिक्षा के कारण ही छू पाए। अध्ययन, प्रार्थना और परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि से मसीही स्त्री पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों के जीवनों में अद्‌भुत बदलाव लाती है।

टिप्पणियां

[1]एवरेट फर्ग्यूसन, ''*टोपोस* इन 1 तिमोथी 2:8,'' *रेस्टोरेशन क्वार्टली* (1 अप्रैल 1991): 65. [2]वही, 73. [3]एवरेट एण्ड नैंसी फर्ग्यूसन, ''एनटी टीचिंग ऑन द रोल ऑफ़ वुमेन इन द असैम्बली,'' *गॉस्पल एडवोकेट* (अक्टूबर 1990): 30. [4]Theosebeia का मूल अर्थ ''परमेश्वर के लिए श्रद्धा'' है। नये नियम में यह शब्द केवल यहीं आता है। NIV में इसका अनुवाद ''परमेश्वर की आराधना'' है।

स्त्रियां और सिखाना

जवान प्रचारकों को सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बताते हुए पौलुस ने उन्हें कलीसिया के सदस्यों को सिखाने के बारे में भी सलाह दी। तीतुस 2 में उसने स्पष्ट बताया कि तीतुस को बूढ़े पुरुषों और स्त्रियों, जवान स्त्रियों और जवान पुरुषों को क्या सिखाना है।तीतुस ने इन वर्गों को सिखाना था ताकि वे भी सिखाने वाले हो सकें। बूढ़ी स्त्रियों को सिखाने में जवान स्त्रियों की सहायता करनी थी, ''... अच्छी बातें सिखाने वाली हों , ताकि वे जवान स्त्रियों चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए'' (2:3-5)।

बूढ़ी अर्थात अधिक अनुभवी स्त्री के अलावा जवान स्त्रियों को प्रभावशाली ढंग से और कौन सिखा सकता है ? सुसामाचार के किसी भी प्रचारक को मण्डली में कुछ ऐसी बूढ़ी स्त्रियों को भर्ती करने की सलाह दी जानी चाहिए, जो जवान स्त्रियों को अकेले में समझाने के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर उन्हें निरन्तर क्लासों में सिखा सकें।

केवल एक ही आयत हमें बता देगी कि स्त्रियों को प्रचार नहीं करना चाहिए यानी उन्हें कलीसिया की मिली-जुली सभा में अधिकार पूर्ण सम्बोधन नहीं करना चाहिए। 1 तीमुथियुस 2:11, 12 में हम पढ़ते हैं, ''स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।'' स्त्री को *hupotage* होने अर्थात ''अधिकार के अधीन'' या ''आज्ञा के अधीन'' होने के लिए कहा गया है, जब वह ''पूरी अधीनता'' से निर्देश लेती है। प्रचारक ''अधिकार पर'' या ''पूरे अधिकार'' (यू. *epitage*) का इस्तेमाल करता है, जो पुलपिट के उसके काम के बिल्कुल विपरीत विचार हैं।

कई मसीही स्त्रियां दूसरी स्त्रियों और बच्चों की शानदार शिक्षिकाएं हैं, परन्तु उनका उचित अधिकार पुलपिट नहीं है। इस विषय पर परमेश्वर ने बात की है।

एड सैंडर्स

टिप्पणी

[1]1 तीमुथियुस 5 में कलीसिया में विधवाओं और अधिकारियों (एल्डरों) की, फिर दासों की भी बात की गई है। तीतुस 2 अध्याय में उम्र और लिंग समूहों में केवल दासों को ही जोड़ा गया है।